बाँसुरी - 1

कक्षा 3 के लिए
कला की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

0338

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Reprint 2026-27

0338 – बाँसुरी-1
कक्षा 3 के लिए कला की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-462-2

प्रथम संस्करण
अगस्त 2024 श्रावण 1946

PD 100T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा कल्याण इन्टरप्राइज़ेज़, डी-20, सैक्टर बी-3, ट्रोनिका सिटी इंडस्ट्रियल एरिया, लोनी, गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
उत्पादन अधिकारी	:	*जहान लाल*

डिजाइन एवं लेआउट: ऋतु टोपा, आर्ट्स क्रिएशन्स, नई दिल्ली
चित्रांकन: मोहित जोशी, मुंबई
आवरण: संतोष मिश्रा, एमार्ट्स, दिल्ली

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए, उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्‌भुत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने का अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी अवलंबन देता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण आरंभिक स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

आरंभिक स्तर, जो बुनियादी और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है, विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है, जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। यह कहना अनावश्यक होगा कि इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ सतत रहेंगी लेकिन इसी बीच इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों के द्वारा आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 3 की यह पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' कला शिक्षा के लिए है और उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विकसित की गई है। इस विषय को पहली बार औपचारिक रूप से पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया गया है। पाठ्यपुस्तक को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* की अनुशंसाओं के अनुरूप तैयार किया गया है। यह पुस्तक आनंदमय शिक्षा के माध्यम से बच्चों को न केवल रचनात्मक अनुसरण की ओर ले जाती है अपितु पंचकोश के पाँचवें हिस्से आनंदमय कोश के विकास में सहायता करती है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को न केवल संगीत, दृश्यकला, नाटक और नृत्य की गतिविधियों का आनंद लेने में सक्षम बनाएगी अपितु कला के विषयक्षेत्रों की मूलभूत समझ भी विकसित करेगी।

पुस्तक में दी गई गतिविधियाँ, दृश्य एवं चित्र, एक सर्व समावेशी कक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर विकसित की गई हैं। पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' में निहित कला की सामग्री भारत के विभिन्न भागों की विविध सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत की अनुभवात्मक यात्रा सुनिश्चित करती है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी सम्मिलित हैं। गतिविधियों में मूल्यांकन के बिंदु अंतर्निहित हैं।

इस स्तर पर बच्चे स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं और उनके पास बहुत सारे प्रश्न होते हैं। इसलिए यह पुस्तक उनकी सीखने की मूल उत्सुकता को संबोधित करने के लिए सभी प्रयास करती है तथा खेल और खिलौनों के साथ सीखने की प्रक्रिया को जोड़ती है। इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, साथ ही यह अपेक्षा है कि बच्चे इस विषय पर बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और सीखेंगे। स्कूलों में पुस्तकालयों को इस संबंध में प्रावधान करने की आवश्यकता है। साथ ही, इस प्रकार से माता-पिता और शिक्षक उन्हें और अधिक सीखने में सहायता करेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

इस विश्वास के साथ, मैं यह पुस्तक आरंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जून 2024

© NCERT not to be republished

नमस्ते! शिक्षको एवं अभिभावको

आपके हाथों में कक्षा 3 की कला पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' है। कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2023* के आधार पर विकसित की गई है। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे पाठ्यचर्या लक्ष्यों को प्राप्त करें। इसके साथ-साथ सीखने के परिणामों के आधार पर एक पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.)* ने कक्षा 10 तक कला के अनिवार्य पाठ्यक्रम विषयों में से एक के रूप में अनुशंसा की है और यह भी अनुशंसा की है कि स्कूल कला के लिए शैक्षणिक सत्र में कम से कम 100 घंटे देना सुनिश्चित करें, जिसमें कला के चार घटक या क्षेत्र— दृश्य कला, संगीत, नृत्य और अंग संचालन तथा रंगमंच हैं। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' को चार इकाइयों में विभाजित किया गया है, जिसमें कुल 20 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में कई गतिविधियाँ हैं जिन्हें इस कक्षा के बच्चे आपके सहयोग से आसानी से कर सकते हैं। खोज और रचनात्मकता की इस प्रक्रिया में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस प्रक्रिया को प्रत्येक बच्चा पूरे शैक्षिक सत्र में अनुभव करेगा।

> शिक्षक हमारे समाज के सबसे अनिवार्य और सम्मानित सदस्य हैं, इसलिए शिक्षा नीति शिक्षकों को सभी स्तरों पर पुनर्स्थापित करने में सहायक होनी चाहिए। चूँकि वे अगली पीढ़ी के नागरिक तैयार करते हैं, इसलिए शिक्षा नीति द्वारा शिक्षकों को सशक्त बनाने हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए और उन्हें उनका कार्य प्रभावशाली ढंग से करने में सहायता प्रदान करनी चाहिए।
>
> —राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, परिचय

क्या आप जानते हैं?

यह पहली बार है कि कला के लिए एक पाठ्यपुस्तक बनाई गई है जो प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत और समूह में काम करने, टिप्पणी करने, लिखने, पढ़ने और बहुत-सी गतिविधियाँ करने के अवसर प्रदान करती है। यद्यपि बच्चे विद्यालयी शिक्षा की प्रक्रिया का औपचारिक हिस्सा बनने से पहले ही गायन, नृत्य, अनुकरण और लिखना आदि शुरू कर देते हैं तथापि आपके कुशल मार्गदर्शन में संगीत, रंगमंच, नृत्य और अंग संचालन तथा दृश्य कला विषयों से युक्त एक सार्थक कला कक्षा में सम्मिलित होने का यह उनका पहला अनुभव होगा। बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक घटकों में से कला भी एक महत्वपूर्ण घटक है और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*

© NCERT not to be republished

(एन.सी.एफ.-एस.ई.) इसे विद्यालय पाठ्यक्रम में एक उचित स्थान देती है। बच्चे अपने कलात्मक अनुभवों के माध्यम से अनेक मूल्य सीखेंगे, जैसे— समूह में एक साथ काम करना, अपने विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करना, कक्षा के अपने सभी साथी विद्यार्थियों को अपनी कलात्मक यात्रा में सम्मिलित करना, एक समावेशी वातावरण में काम करना, अपनी राष्ट्रीय विरासत के प्रति सचेत रहना आदि। सबसे अधिक बढ़कर वे सभी 'बाँसुरी-1' में सुझाई गई गतिविधियों का आनंद लेंगे!

'बाँसुरी-1' का उपयोग कैसे करें?

यह पाठ्यपुस्तक चार इकाइयों में विभाजित की गई है और इसे बच्चे आसानी से समझ सकें, इसलिए प्रत्येक इकाई को एक अलग रंग दिया गया है। बच्चों को आरंभ में ही बताया जा सकता है कि नीचे दिए गए रंग किस कला के लिए हैं—

- ☞ पीला दृश्य कला के लिए है
- ☞ नीला संगीत के लिए है
- ☞ गुलाबी नृत्य और अंग संचालन के लिए है
- ☞ बैंगनी रंगमंच के लिए है

पाठ्यपुस्तक की चारों इकाइयाँ अलग-अलग हैं, लेकिन साथ ही इनमें समानताएँ भी हैं। प्रत्येक इकाई कला के उस रूप के बारे में एक परिचय के साथ शुरू होती है जिसे सीखने वाला अनुभव करेगा। आपके लिए गतिविधियों को व्यवस्थित करने, संसाधनों की खोज करने के लिए प्रत्येक अध्याय के क्यू.आर. कोड विशेष रूप से लगाए गए हैं, जिनको स्कैन करके आप अतिरिक्त संसाधनों तक पहुँच सकते हैं। यदि आपकी पहुँच इंटरनेट तक नहीं है तो ऐसे में आप या तो बच्चों को कला प्रदर्शन स्थलों पर ले जा सकते हैं या स्थानीय कलाकारों, लोक संगीतकारों, नर्तकों एवं अन्य कलाकारों को बच्चों के साथ अंत:क्रिया करने के उद्देश्य से विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं। कई अभिभावक और

© NCERT not to be republished

समुदाय के अन्य सदस्य जो किसी कला में पारंगत हैं, वे बच्चों के सामने उस कला का प्रदर्शन करने हेतु सहमत हो सकते हैं। विद्यालयों में कलाकारों आदि के साथ वार्ता सत्रों का आयोजन किया जा सकता है, जिनमें बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद होगा। बच्चे अपने आस-पास, प्रकृति एवं दैनिक गतिविधियों का अवलोकन करें, इसके लिए आप उन्हें कक्षा से बाहर विद्यालय परिसर में ले जाएँ। नाटक, नृत्य-प्रदर्शन, संगीत समारोह और कला प्रदर्शनी आदि देखने के लिए शैक्षणिक यात्राओं का आयोजन करने से बच्चों को प्रेरित करने में सहायता मिलती है। इस पाठ्यपुस्तक में अनेक गतिविधियाँ सुझाई गई हैं, आप इसमें अन्य गतिविधियों को भी समावेशित कर सकते हैं, जिनमें विषय के अनुरूप उपलब्ध स्थानीय सामग्री और संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

आपकी समय-सारिणी इस तरह से तैयार की जानी चाहिए कि बच्चों को प्रत्येक सप्ताह आवंटित सभी चार कला रूपों के लिए निर्दिष्ट कालांशों का अवसर प्राप्त हो। जहाँ भी संभव हो बच्चों के लिए गतिविधियाँ करने के लिए एक कालांश या दो संयुक्त कालांश रखे जा सकते हैं क्योंकि सभी गतिविधियाँ काफी आकर्षक एवं आनंददायक होती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* सभी विषयों को समान महत्व प्रदान करती है, जिसमें कला भी सम्मिलित है। इसलिए अभिभावकों से अनुरोध है कि वे घर पर बच्चों को कला गतिविधियाँ करने पर हतोत्साहित न करें। शिक्षकों और विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि समय-सारिणी में कला विषय को प्रदान किए गए समय का उपयोग अन्य विषयों के लिए न किया जाए।

प्रत्येक कला कक्षा की शुरुआत से पहले बच्चे केवल आँख बंद करके पिछली कक्षा में क्या किया गया, उस पर ध्यान दे सकते हैं। कक्षा के अंतिम 10 मिनट चर्चा के लिए रखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए रंगमंच इकाई में सुझाव दिया गया है, शिक्षक सभी बच्चों के साथ बैठकर बातचीत करें, परंतु इस समय यह चर्चा बच्चों के लिए अनौपचारिक होती है। इस समय शिक्षक बच्चों से टिप्पणियाँ ले सकते हैं, जिन्हें वे अगली पाठ्य योजनाओं में सम्मिलित कर सकें।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

विभिन्न अवधारणाओं पर बच्चों की समझ विकसित करने के लिए समग्र अधिगम वातावरण प्रदान करने का भाव पाठ्यपुस्तक और शिक्षणशास्त्र में पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित होता है। शिक्षक उन्हें समूह में या व्यक्तिगत रूप से कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु सहायता करें, जिससे बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करने में सहायता मिल सके। यह प्रक्रिया पुस्तक के सभी चार कला रूपों के लिए लगातार चलती रहे। बच्चों को अपने आस-पास की वस्तुओं का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही वे कक्षा में जो कुछ करते हैं, उसका अभ्यास व कला कार्य को घर पर भी जारी रखें।

अपने अवलोकन और चर्चाओं के माध्यम से एक बच्चे में योग्यता और कौशल विकास के स्तर की प्रगति को चिह्नित करने के लिए आकलन के उपाय भी सुझाए गए हैं। कला में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण के पैमाने का उपयोग न किया जाए, इस स्तर पर कुछ भी अच्छा या बुरा नही हैं, सुधार की संभावना सदैव बनी रहती है और बच्चों को अवधारणाओं की समझ के साथ गतिविधियों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा उनके लिए एक लंबी यात्रा है और हर बच्चा भिन्न है, उनके कौशल और अभिव्यक्ति के तरीके भी भिन्न हैं और यह भिन्नता ही उनके बालपन की सुंदरता है। उनके प्रदर्शन की तुलना कक्षा में किसी से नहीं की जानी चाहिए, अपितु सुधार लाने हेतु उनकी प्रतिस्पर्धा स्वयं से होगी।

कला कक्षा के लिए आपको क्या-क्या चाहिए?

सभी कला गतिविधियों के लिए आपको प्रकाशयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है जो कक्षा के अंदर या बाहर हो सकता है, जहाँ बच्चे मुक्त रूप से कला संबंधी गतिविधियाँ कर सकें। आपको रंगमंच में आवश्यक वस्तुओं के लिए सुलभ सामग्री, कला सामग्री, उपकरण और मूलभूत स्टेशनरी, सामग्री को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने के लिए स्थान, साथ ही व्यवस्थित तरीके से विद्यार्थियों की कलाकृति को प्रदर्शित और साझा करने के लिए प्रदर्शन पटल, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, स्पीकर और

© NCERT not to be republished

संगीत वाद्ययंत्रों आदि की आवश्यकता होगी। सुनिश्चित करें कि वस्तुओं का उपयोग उचित प्रकार से किया जा रहा है और ये स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक प्रत्येक शिक्षक और अभिभावक के लिए उपयोगी, रोचक और संसाधनपूर्ण सिद्ध होगी। यह प्रत्येक कला कक्षा को रोमांचक बनाएगी और उसका विस्तार करते हुए उसके अन्य आयामों को खोलेगी। हम इस पुस्तक को अधिक सफल बनाने के लिए आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं, जो पुस्तक की संरचना और सामग्री को बेहतर करने में सहायता प्रदान करेंगे। यह पाठ्यपुस्तक दृश्य कलाओं और प्रदर्शन कलाओं को प्रत्येक बच्चे के विकास की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने, उन्हें भावनात्मक रूप से सशक्त बनाने और संतुलित नागरिक बनने के लिए कौशल विकसित करने का एक निरंतर प्रयास है।

ज्योत्स्ना तिवारी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)
मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)
सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद
बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई
यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू
मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी. गांधीनगर
सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.
चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

शंकर महादेवन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

योगदान

अनुतोष देब, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *टी.जी.टी.*, आर्ट्स, (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय, गुवाहाटी

आराधना गुप्ता, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

गोविंदराजु भारद्वाज, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *निदेशक* एवं *प्रोफेसर*, स्कूल ऑफ परफॉरमिंग एंड विजुअल आर्ट्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

चिंथु साची, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

प्रियदर्शिनी घोष, *विशेषज्ञ*, नृत्य कला

फणींद्र शर्मा, *परामर्शदाता*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

बिंदु सुब्रमण्यम, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

बिदिशा हाजरा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, संगीत, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मालविका राजनारायण, *विशेषज्ञ*, दृश्य कला शिक्षा

राजश्री एस.आर., *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रिम्सी खन्ना, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कॉलेज ऑफ आर्ट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

शर्बरी बैनर्जी, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

श्रीधर रंगनाथन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

© NCERT not to be republished

समीक्षक

अनुराग बेहर, *सदस्य*, एन.ओ.सी.

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी

संध्या पुरेचा, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *अध्यक्ष*, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

अनुवाद एवं अनुवाद समीक्षा समिति

अरुणाभ सौरभ, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

अशेष उपाध्याय, *टी.जी.टी.*, संगीत, प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

दिनेश वशिष्ट, *संपादक*, हिंदी (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प.

मधुसूदनन पी.वी., *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

राम झलक यादव, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (संविदा), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शुभम वर्मा, *पी.जी.टी.* (संविदा), चित्रकला, प्रायोगिक विद्यालय, भोपाल

श्रुति अधिकारी, *पी.जी.टी.*, संगीत, प्रायोगिक विद्यालय, भोपाल

सुचिता राउत, *पी.जी.टी.* एवं *विभागाध्यक्ष*, कला विभाग, दिल्ली पब्लिक स्कूल, नीलबड़, भोपाल

सुषमा श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त *उप प्रधानाध्यापक*, प्रायोगिक विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

सदस्य समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, *सदस्य समन्वयक*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निरीक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.) के सम्मानीय अध्यक्ष और सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) कला के अध्यक्ष और सदस्यों एवं अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह के उन सभी सदस्यों का आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण तथा इसके विभिन्न विषयों को अंतिम रूप देने में अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है।

इस पाठ्यपुस्तक में जेंडर एकीकरण, समावेशन, मूल्यांकन आदि की समीक्षा के लिए परिषद् अपने संकाय के वरिष्ठ सदस्यों, सुनीति सनवाल, *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; मिली रॉय, *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग के प्रति आभारी है।

पाठ्यपुस्तक के निर्माण के लिए परिषद् सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टि मनिपाल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, बेंगलुरू; सुधनवा ए.के., *निदेशक*, नव क्षितिज एवं *असिस्टेंट प्रोफेसर*, रेवा यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू; दीपा श्रीधर, *निदेशक*, शंकर महादेवन अकादमी; विदुषी ज्योति भट, भरतनाट्यम इंस्ट्रक्टर, पुरनापारामति, बेंगलुरू द्वारा प्रदान किए गए सहयोग के लिए उनके प्रति भी आभार ज्ञापित करती है।

हम उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, छायाचित्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली; नेशनल क्राफ्ट म्यूज़ियम एवं हस्तकला अकादमी, नई दिल्ली; सेंटर फॉर कल्चरल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, नई दिल्ली; दस्तकारी हाट समिति, नई दिल्ली; सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, सी.सी.एम.टी.; सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स; शंकर महादेवन म्यूजिक अकादमी, सुनाद, बेंगलुरू; चिल्ड्रन्स

© NCERT not to be republished

लिटल थिएटर, कोलकाता; व्योम आर्ट्स्पेस एंड स्टूडियो थियेटर, बेंगलुरू; सुनीता कंविंदे, नई दिल्ली और अनुतोष देब, *टी.जी.टी.* (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहाटी क्षेत्र सम्मिलित हैं। हम केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 2, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली और केंद्रीय विद्यालय, डोगरा लाइन्स, मेरठ के प्रधानाचार्यों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने बच्चों की कलाओं के चित्र, कला-प्रदर्शन करते बच्चों के चित्र आदि उपलब्ध कराकर हमें सहयोग प्रदान किया है। परिषद् पुस्तक के डिजाइन और ले-आउट के लिए रीतू टोपा, आर्ट क्रिएशन्स की आभारी है।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); राहुल सेमवाल, *सहायक संपादक* (संविदा); अभिजीत प्रसाद, *हिंदी प्रूफ रीडर* (संविदा); पांडुलिपि को आकार देने और पुस्तक का स्वरूप प्रदान करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ और अजय कुमार प्रजापति, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की भी सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

प्यारे बच्चो

आप अपने हाथों में अपनी कला की पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' लिए हुए हैं। हम आशा करते हैं कि आप इसका भरपूर आनंद लेंगे। यह आपको रचनात्मकता की अद्भुत यात्रा पर लेकर जाएगी और आपके आस-पास से एक अनोखे ढंग से परिचित कराएगी।

हम यह जानते हैं कि आप में से अधिकतर बच्चे पहले से ही किसी न किसी प्रकार की कला से जुड़े हुए हैं। संभवतया आप उनको कला के विभिन्न रूपों की तरह से नहीं जानते, लेकिन जो आप कर रहे हैं वह कला ही है— नृत्य करना, वाद्ययंत्र बजाना, गोदा-गादी करना, रेखांकन करना, चित्र बनाना, मिट्टी या कागज से नमूने या खिलौने बनाना, गाना, अन्य व्यक्तियों की नकल करना, नाटक करना आदि, जो कलाात्मक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं, वे वास्तव में अपने दैनिक जीवन का आनंद लेते हैं।

आप चाहे विद्यालय में हों या घर पर या कहीं जाते हैं तो अपने आस-पास का अवलोकन करना आनंददायी होता है, जैसे— पक्षियों का उड़ना, साइकिल से काम पर जाते हुए लोग, काम के लिए तैयार होती हुई माँ, सुबह उठने से लेकर रात को बिस्तर पर जाने तक आपकी अपनी दिनचर्या की गतिविधियाँ, मैदान में खेलते हुए बच्चों आदि को देखना कितना आनंददायक है! हम प्रकृति के निकट रहते हैं और प्रकृति हमारी कलाओं के लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत है।

इसलिए बच्चो, अपने चारों ओर देखो, अपने घर, विद्यालय, परिवार, बगीचे, खेल के मैदान में, यात्रा करते समय सड़क के किनारे, जहाँ भी तुम जाओ, तुम्हें कला दिखाई देगी। कभी प्रकृति द्वारा बनाई गई और कभी-कभी, मनुष्यों द्वारा बनाई गई। इन्हें देखकर आप आनंदित हो उठेंगे!

क्या आप जानते हैं कि मानवता के आरंभ से ही मनुष्य बहुत रचनात्मक रहा है। इससे पहले कि मनुष्य बोलना या लिखना शुरू करते, वे आपकी तरह दीवारों पर चित्रकारी करते, गाते

© NCERT not to be republished

और नृत्य करते थे। विशेषकर हमारे भारत देश में कला-संस्कृति की समृद्ध विरासत रही है— दृश्यकला से लेकर काव्य एवं संगीत, नृत्य, रंगमंच आदि। इनकी नींव हजारों वर्ष पुरानी है, जिसका संबंध कई अन्य विषयों से हैं। कला किसी न किसी रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है और हम सभी रचना, प्रदर्शन, अवलोकन और अनुभव द्वारा कला का आनंद लेते हैं। कला में ऐसी सुंदरता है जो हमारे जीवन को सुंदर बनाती है और हमें आनंद देती है। साथ ही, हमारे भीतर हमेशा एक छोटा-सा कलाकार होता है, जो अनुभव करने, प्रदर्शन करने या कुछ सृजन करने के लिए उत्सुक रहता है।

बाँसुरी-1 में चार कला रूप हैं और ऐसी कई मनोरंजक गतिविधियाँ हैं जिनके माध्यम से आप इन कला रूपों को सीखेंगे—

1. दृश्य कला में आपको रेखांकन, चित्रकला, काटना, चिपकाना आदि गतिविधियाँ करने, मिट्टी, रंग, प्राकृतिक वस्तुओं आदि जैसी सामग्रियों के साथ खेलने में आनंद आएगा।
2. संगीत में आपको देश के अलग-अलग भागों और विभिन्न भाषाओं के गीतों को गाने और वाद्ययंत्रों को बजाने का अवसर मिलेगा। आप संगीत और वाद्ययंत्रों के बारे में जानेंगे।
3. नृत्य और अंग संचालन में आप मुक्त रूप से शरीर को हिलाने-डुलाने, थिरकने, धुनों और गीतों पर विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का आनंद लेंगे। इसके साथ-साथ हाथों और पैरों की विभिन्न मुद्राओं के बारे में भी जानेंगे।
4. रंगमंच भाग में नाटक आपको निश्चित रूप से पसंद आएगा। इसमें विदूषक आपको अभिनय, मंच, सहायक सामग्री और अन्य कई यात्राओं पर ले जाएगा।

इसलिए, आइए बच्चो, कला का अन्वेषण करें। इस कला यात्रा का आनंद लें और अपने मित्रों, शिक्षकों और परिवार के साथ प्रतिदिन कुछ नया बनाएँ, गाएँ और दिखाएँ।

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

आमुख .... *iii*
नमस्ते! शिक्षको एवं अभिभावको .... *v*
प्यारे बच्चो .... *xv*

दृश्य कला

1. कला एवं वस्तुएँ 3
2. कला एवं पेड़-पौधे 12
3. कला एवं जीव-जंतु 22
4. हमारे आस-पास के लोग 30
5. त्यौहार, उत्सव और समारोह 35

संगीत

6. हमारा राष्ट्रगान 43
7. लय का अनुभव करें– त क त कि ट 45
8. विभिन्न गीत गाएँ 58
9. वाद्ययंत्र 64
10. उत्सव मनाएँ 71

© NCERT not to be republished

नृत्य और अंग संचालन

11. आइए, नृत्य करें 82
12. आनंद के लिए नृत्य 88
13. आइए, नृत्य करते हुए खेलें 93
14. प्रकृति के साथ नृत्य 98

रंगमंच

15. आइए, पता लगाएँ 107
16. कल्पना करें 118
17. आइए, सृजन करें 124
18. आस-पास देखें 128
19. गतिविधियाँ 135
20. कला-विधाओं का एकीकरण 137

© NCERT not to be republished